

सितो रक्षस्थापीतः द्वाया इत्यभिश्चितः।
ब्रह्मादिजातिभेदेन चर्मणां वर्णनिर्णयः॥
चित्वर्णसु सर्वेषां सर्वदेवोपयदत् ॥”*।
ब्रह्मविद्यार्थं क्षमासारथर्मं। इत्यमरः। २।७।
४७। (यथा, मदुः) २। ४१।
“कार्वल्लैरेववासानि चर्मणां व्रज्ञापारिणः”)
चर्मकथा, खौ, (चर्मणः कवा। चर्मन कवतीति।
कष्ट + अच् इत्येके।) पश्चिमदेश्वातां गम्य-
द्रव्यम्। केचितु चामारकथा इति खाता
इत्याहुः। इति भरतः। तत्पर्यायः। सप्तला २
विमला ३ सातला ४ भूरिफेना ५। इत्यमरः।
२। ४। १४३। प्रातला ६ चर्मकंशः ७। इति
भरतः। मासरोहिणी। इति राजनिर्वगः।
(“चर्मकथायाः कल्कं विक्षेपम् महीं काक-
पदमस्य।
क्षत्वा क्षयात् कटभीं कटुकोटपक्षाप्रधमनश्च”)
इति चरके चिकित्सास्थाने पश्चिमेष्ठाये।
चर्मकसा, खौ, (चर्मणः कवा।) चर्मकथा।
इत्यमरटीकार्या भरतः।
चर्मकारः, पुं, (चर्म चर्मनिर्मितद्रव्यादिकं
करोतीति। क्ष + “कर्मणश्च”।) ३।२।१। इति
चरण्। वर्णसंक्षरजातिविशेषः। चामार इति
सुचि इति च भाषा। स तु चकाल्यां तौवरा-
च्छातः। इति पराश्रपहतिः। तत्पर्यायः। पादू-
क्षत् २। इत्यमरः। २। १। ७। पादुकत् ३ चर्मारः; ३।
इति तद्वौका। चर्मकृत् ५ पादुकाकारः ६।
इति हलायुधः। चर्मरः ७ कुरुटः ८। इति
चिकाङ्गेष्ठः। (यथा, मदुः। १०। ३६।
“कारावरो निशादतु चर्मकारः प्रस्तुते १”)
चर्मकारी, खौ, (चर्म करोति वर्षयति उत्तर्कर्षं
करोतीति यावत्। क्ष + अच्। चर्म किरतीति
चर्म + क + अलियेके। ततो डौष्।) चर्म-
कर्वैष्ठिः। इति मेदिनी। २, २६।
चर्मकौलः, पुं, (चर्म कौलतीति। कौल + अच्।
चर्मणि गुद्यस्थरमेणि कौल इवेति वा।)
गुह्यरोगविशेषः। हालीश इति हारिष् इति
च भाषा। तस्य निदानं यथा,—
“आनो यहीला शेशाणं करोग्यश्चल्लो वहः।
कौलोपमं स्थिरखं चर्मकौलस्तु तद्विदः।
वातेन तोदप्राप्यं पित्तादितरकृता।”
श्चेष्टाणा त्राघता तस्य यथित्वं सर्वर्णता।”
इति माधवकरेण रोगविच्छययर्थं अश्वो-
रोगाधिकारे धृतम्। अतोऽस्य चिकित्सा
अर्घ्यरोगचिकित्सावत्। अपि च।
“चर्मकौलं जुतुमणि भस्मकान् तिळकानकान्।
उत्कृत्य शृङ्गेण इहेत् चाराण्डिभास्मशेषतः।”
इति भावप्रकाशः।
चर्मकृत्, पुं, (चर्म कृतात् चर्मचटितपाइका-
दिक्म् उत्ताप्त्यैर्वैश्चर्यः। चर्म + क + क्षिप्।)
चर्मकारः इति हलायुधः। (यथा, राज-
तरकिण्याम्। ४। ५५। [योगिनीम्।])
“चर्मकृत् खोडपि न आदात् कृटों द्वेत्रोप-

चर्मचटका, खौ, (चर्मणा चटकेव।) निशाचर-
पत्तिविशेषः। चामूचिका इति भाषा। तत्-
पर्यायः। जतुका २ लाजिनपत्रिका ३। इति
हेमचन्द्रः। जतुका ४ यहीमादिका ५ जतुनो६
चर्जिनपत्रा ७ चर्मिः ८ चर्मचटी९। इति
शृङ्गरत्नावली। चर्मपत्रा १०। इति जटा-
धरः। चर्मचटिका ११। इति केचित्।
चर्मचटी, खौ, (चर्मणा चटीव। यहा, चर्म
चटति भिनतीति। चट + अच् डौष्।) चर्म-
चटका। इति शृङ्गरत्नावली।
चर्मदिचकं, खौ, (चर्मणि चिचकं चिचित-
मिवेत्थः। चर्म चिचयतीति वा। चिच +
खुल्।) चेतक्षुलम्। इति राजनिर्वगः।
चर्मजं, खौ, (चर्मणी चर्मणि वा जायते। जन +
दः।) रोम। रुधिरम्। इति राजनिर्वगः।
चर्मखती, खौ, (चर्मैव उत्पत्तिहेतुलेनस्यस्याः
इति मुतुप मत्य वलम्।) नदीविशेषः। सा तु
पुर्वेलखलाखदेशे चम्बल् इति खाता।
कहली। इति मेदिनी। ३, १४६। (आसीतु किल
पुरा रन्तिदेवनामा (शश्विद्वनामावा) कच्छित्
राजचक्रवर्ती। तस्य यज्ञे मारिता ये गाव-
स्त्रेण चर्मगलितरखलेदादिभ्यो जातेयं नदीति
पौराणिकी गाथा। यथा, देवीभागवते। ३।
१८। ५४।
“चर्मणां पर्वतो जातो विन्ध्याचलसमः पुनः।
मेघानुवागनाचाता नदी चर्मखती शुभा ॥”)
चर्मदक्षः, पुं, (चर्मभिष्ममणा वा निर्मितो
दक्षः।) कश्चा। इति हेमचन्द्रः। चापुक्
इति भाषा।
“चर्मदक्षाहतो विषः शशेषापातिस्या च तम् ॥”
इति महाभारतशान्तिपर्वोण ॥)
चर्मद्विका, खौ, (चर्म द्वृष्टयति दोषयति वा।
इष्ट + शिष्ट + खुल्। तत्तदापि अत इत्यम्।)
कोठरोगः। इति राजनिर्वगः।
चर्मसरङ्गः, पुं, (चर्मणा चर्म भिर्वा तदङ्ग इव।)
वलिः। लक्ष्मङ्गोः। इति राजनिर्वगः।
चर्मद्विमः, पुं, (चर्मलक्ष्मिवल्लभमधेऽद्विमः।)
भूर्जडः। इति राजनिर्वगः।
चर्मपत्रा, खौ, (चर्म मयं पत्तं पत्तद्वयं यस्ता।)
चर्मचटी। इति जटाधरः।
चर्मपाइका, खौ, (चर्मनिर्मिता चर्ममयी वा
पाइका।) उपानत्। चामहार जुता इति
भाषा। यथा। “ततो ब्रह्मचारी अनेन मन्त्रेण
चर्मपाइकायुगे पादौ निश्चात्।” इति भव-
देवमधृः। अस्ता गुणाः पाइकाशृङ्गे धृतयः।
चर्मपुटः, } पुं, (चर्मनिर्मितः पुटः फैक्म्।)
चर्मपुटकः, } पत्ते खार्षे कन्। चर्ममयं सू-
टम् इति कप् इत्येके।) चर्मनिर्मितपत्र-
विशेषः। चूपा इति भाषा। यथा। इति चर्म-
पुटः। इति चर्मपुटे भूत्यस्यै चिति मेदिनी।
इति पुलिङ्गचंगहीटोकार्याभरतः। तत्पर्यायः।
इति खस्त्रमेमयीति हेमचन्द्रः।

चर्मप्रभेदिका, खौ, (चर्म प्रभिनतोति। प्र +
भिद + खुल्। टापि अत इत्यच्च।) चर्म-
प्रभेदनाल्लम्। इत्यमरः। २। १०। ३५।
पोड़ इति भाषा।
चर्मप्रसेवकः, पुं, (चर्मणा प्रसीदते इति। पिं
तनुसन्नाने + “संज्ञायाम्”। ३। ३। १०६।
इति कर्मणि खुल् बाहुलकात् दुन् वा।) चर्मप्रसेविका। इत्यमरटीकार्या भरतः।
चर्मप्रसेविका, खौ, (चर्मप्रसेवक + टापि अत
इत्यच्च।) अविसन्दीपनार्थं चर्म निर्मित-
यम्भम्। भरतौ इति जाता दूति च भाषा।
तत्पर्यायः। भस्ता २। इत्यमरः। २। १०। ३३।
चर्मसुका, खौ, (चर्मणः जीवरहितदेवस्ये-
त्वर्थः सुक्षमस्तिहस्तेष्या इति। क्षिप्तिरो-
धारणादेव तथालम्।) द्वारा। इति हेम-
चन्द्रः। २। १२०। (चर्मसुका। इत्यपि
क्षिति पाठः।)
चर्मसज्जा, खौ, (चर्मणे रङ्गो यस्याः।) आवर्म-
कौलता। इति राजनिर्वगः। (देशविशेष, पुं।
स च देशः द्रूमैविभागे पश्चिमोत्तरस्यां दिशि
उक्तः। यथा, दृहत्वंहितायाम्। १४। २३।
“दिशि पश्चिमोत्तरस्याम्” इत्युपक्रम्य,—
“वेणुमती फलगुलुका
गुरुहा मरुकुचचर्मसज्जा।”
इत्युक्तानाम् ॥)

चर्मसः, पुं, (चर्म रचयतीति। रच + बाहु-
लकात् छः।) प्रमकारः। इति चिकाङ्गेष्ठः।
चर्मसम्भवा, खौ, (चर्मणि समव उत्पत्ति-
र्यस्माः।) एला। इति हारावली। ४०।
चर्मसामः, पुं, (चर्मणः वारः। भुक्तद्येष्यो
रसस्य लहमध्ये जायमानत्वात् तथालम्।)
रसः। इति राजनिर्वगः।
चर्मामः, पुं, (चर्मणोम्भः जलम्। सर्वे सामा-
न्यदनात्।) इति न्यायाद्वच अकारान्तः।
क्षितु खौषे बल्लोपि दृश्यते।) रसः। इति
राजनिर्वगः।
चर्मारः, पुं, (चर्म चर्मकिर्यां जस्त्वतीति।
ज्ञ गतौ + “कर्मणश्च”। ३। २। १। इत्यच्च।)
चर्मकारः। इति जटाधरः।
चर्माँ, [न्] पुं, (चर्म शरीरावरकं शस्त्रविशेषो-
स्यस्य। चर्म + इनिः।) चर्मधारियोहा।
दाली इति भाषा। तत्पर्यायः। फलक-
पालः २। (यथा, महाभारतै। ३। २। ३। १।
“ज्ञामं दृहनं तरुणं चर्मिणासुसमं रुग्मे।
नग्नां ते वने दृष्टा केशात् मर्युनं वर्षते।”
चर्म त्वक् अस्त्वसेति।) भूर्जटः। इत्य-
मरः। २। १। ४६। (यथा, सम्मुते चिकित्-
सितैश्च ११ छः।) “चम्भिट्क्षणिरिक्षिका-
श्रीनिहितनिषुलदाङ्गिमाजकर्णहिरदचराजाद-
नगोपचं रटाविकड़तेषु वा यवाहविकाराच्च
संवेत।) भूर्जटः। यौवा। इति शृङ्ग-
रत्नाली।